3. सूरदास के पदों के आधार पर गोपियों की विरह भावना का मूल्यांकन कीजिये। (15)

अथवा

बिहारी के काव्य में चित्रित श्रृंगार चेतना को अपने शब्दों में लिखिए।

4. "भूषण रीतिकाल के वीर रस के कवि हैं" इस कथन की तर्क-संगत समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'घनानंद प्रेम की पीर के सच्चे साधक हैं' - इस कथन की पुष्टि कीजिए।

5. संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए **(कोई दो)** (2×9=18)

(क) सुन्दरकाण्ड का काव्यत्व

(ख) सूरदास के पदों का काव्य-सौन्दर्य

(ग) बिहारी के काव्य में सूक्ष्मता

(घ) केशवदास की 'रामचंद्रिका' में राम कथा वर्णन

(ङ) भूषण के नायक

(च) घनानंद की काव्य-भाषा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5142 **H**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : **बी.ए. (विशेष) हिंदी : DSC**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (3×9=27)

(क) लछिमन बान सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू।।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती।।
ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी।।
क्रोधिहिं सम कामिहि हरिकथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा।।

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा ।।
सन्धानेउ प्रभु बिसिखं कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ।।

अथवा

कौन हौ कित तें चले कित जात हौ केही काम जू।
कौन की दुहिता बहू कहि कौन की यह बाम जू।
एक गाँउ रहौकि साजन मित्र बन्धु बखानियै।
देस के परदेस के किधौं पंथ की पहिंचानियै।

(ख) आए जोग सिखावन पाडे
परमारथी पुराननि लादे ज्यौं बनजारे तां ठाँड़े ।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखें तै राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायेंगे एक म्यान दो खाड़े।
कहु षटपद, कैसे खैंयतु है हाथिन के संग गाँड़े।
काकी भूख गयी बयारि भखि बिना दूध घृत माँड़े।
काहे जो झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाड़े।

अथवा

धाम धरीक निवारिये, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना तीन तमाल-तरु-मिलित मालती-कुञ्ज ।।
मिली चन्दन-बेंदी रही गौरें मुंह, न लखाई।
ज्यौं ज्यौं मद-लाली चढ़ै, त्यौं त्यौं उधरति जाइ ।।

(ग) मीत सुजान अनीति करौ जिन, हा हा न हूजिये मोहि अमोही।
दीठि कौं और कहूं नहिं ठौर, फिरी दृग रावरे रूप की दोही।
एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि प्रान - बटोही।
हौं घनानंद जीवन मूल दई! कित प्यासनि मारत मोही।

अथवा

राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो गाजत गयंद दिग्गजन हिय साल को।
जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत ताप तजि दुजन करत बहु ख्याल को।
साज सजि गज तुरी पैदर कतार दीन्हें भूषण भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को।
आन रावराजा एक मन में न लाऊँ अब साहू को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को।

2. 'रामचरित मानस' के सुन्दरकाण्ड की उपादेयता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

केशव दास की 'रामचंद्रिका' में चित्रित वन गमन प्रसंग का सौन्दर्य वर्णन कीजिए।